eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 5, Issue 01, Jan 2022

कोविड–19 से बदलता वैश्विक राजनीतिक परिदृश्य एवं भारतीय नीति

[1]सौरभ सिंह
[2]गौरव सिंह
[1]सहायक प्रोफेसर राजनीति विज्ञान, मडियाहू पीजी कालेज मडियाहू, जौनपुर उ0प्र0
[2]सहायक प्रोफेसर राजनीति विज्ञान, जयप्रकाश विश्वविद्यालय छपरा, सारन, बिहार

Received: 10 Jan 2022, Accepted: 20 Jan 2022, Published with Peer Reviewed on line: 31 Jan 2022

Abstract

प्रस्तुत लेख ना केवल कोविड–19 महामारी में विश्व व्यवस्था की भूमिका का विवेचन हैं, बल्कि भारतीय नेतृत्व के द्वारा किए गए प्रयासों का एक अवलोकन है। एक ओर जहा प्रत्येक राष्ट्र कोरोना वायरस जैसी महामारी में अपने राष्ट्रीय स्तर ही पर जूझ रहे हैं तथा विकसित देशों का अत्यंत उच्च कोटि का स्वास्थ्य प्रबंधन तंत्र भी विफल हो चुका है। तो वहीं भारतीय नेतृत्व द्वारा न केवल राष्ट्रीय–स्तर पर लड़ाई लड़ी जा रही हैं बल्कि दूसरी ओर मानवता एवं विश्व व्यवस्था को बचाए रखने के लिए अन्य देशों के साथ साझा प्रयासों से साझा सहयोग पर बल दिया जा रहा है। भारतीय नीति निर्माताओं ने दुनिया के सामने यह प्रदर्शित कर दिया हैं कि भारत का प्रयास विश्व में बसी इस मानवीय व्यवस्था एवं मानवीय जिंदगी के हितों की रक्षा करना हैं।

प्रमुख शब्दावली– कोरोना वायरस, महामारी, भारत, विश्व व्यवस्था, कूटनीति।

Introduction

वर्तमान वैश्विक परिस्थितियों के इस दौर में आज मानवीय जगत के समक्ष एक ऐसा संकट पैदा हुआ हैं, जिसकी ना कोई वैज्ञानिक आंशका थी और ना ही इस चुनौती से निपटने की कोई प्रारंभिक तैयारी। इस संकट को दुनिया में कोविड–19 नामक महामारी के रूप में जाना गया, जिसका प्रसार पूरे विश्व में कोरोना वायरस संक्रमण से हुआ। इस वायरस का नाम सुनकर मानव मस्तिष्क में जो वस्तुगत स्थिति उभरती है वह है 'क्वॉरेंटाइन' यानि अपनी गतिविधियौ को सीमित करना। चीन के वुहान शहर से उत्पन्न होने वाला नोवेल कोरोना वायरस 2019 एक महामारी के रूप में आज पूरी दुनिया के मानव जाति को खतरे में डाल रखा है। इसको महामारी के रूप में विश्व स्वास्थ्य संगठन ने इसका नाम कोविड–19 रखा। कोरोना वायरस ने मनुष्य के उसके भविष्य को लेकर कई प्रश्न उत्पन्न कर दिए हैं। इस वायरस ने मनुष्य की वैज्ञानिकता, प्रकृति पर इसके नियंत्रण एवं मानवीय

eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 5, Issue 01, Jan 2022

विवेक की उसकी तार्किकता सबको कटघरे में ला दिया हैं। इसने वैश्विक राजनीति में मैकलुहान के एक 'वैश्विक गांव' पर प्रश्न–चिन्ह खड़ा कर दिया हैं। सवाल यह भी खड़ा होता है कि अगर मौजूद विश्व व्यवस्था सही तरीके से काम करती तो इसका रूप इतना खतरनाक ना बनता, खासकर अंतर्राष्ट्रीय संस्थाएं जैसे– विश्व स्वास्थ्य संगठन की वैधानिकता में उत्तरोत्तर गिरावट का देखा जाना और विश्व स्वास्थ्य संगठन का इस वायरस में चीन की भूमिका के प्रति नरमी बरतना, जिससे इसका रूप ज्यादा ही भयावह हो गया। इसके अलावा इस वैश्विक महामारी से निपटने के लिए विश्व स्वास्थ्य संगठन ने जो भी शुरूआती प्रयास किये, वह भी बहुत जिम्मेदारी पूर्ण नहीं थे। आज विश्व के तमाम अंतर्राष्ट्रीय संगठन जिनको कि इस महामारी से निपटने की चुनौती को स्वीकार करना था, वह आरोप–प्रत्यारोप की राजनीति एवं प्रतिनिधित्व की कमी के संकट से जूझ रहे हैं।

युवाल नोआह हरारी ने अपने एक लेख 'द वर्ल्ड आफ्टर कोरोना वायरस' में इस संकट के बारे में बताया कि किस प्रकार कोरोना वायरस अब तक मानव जाति के सबसे बड़े संकट के रूप में उभर रहा है यही नहीं उनका यह मानना हैं कि यह हमारी पीढ़ी का अब तक का सबसे बड़ा संकट है।1 यह संकट आने वाले समय में दुनिया को एक परिवर्तित आकार प्रदान करेगा और इस परिवर्तित व्यवस्था में प्रत्येक देशों के सामने यह चुनौती होगी कि क्या वे सब इस महामारी को सामूहिक रूप से लड़ने के लिए इसे एक चुनौती के रूप में स्वीकार करेंगे। हरारी का यह मानना है कि प्रत्येक देश को सूचनाओं को साझा करना चाहिए और जो भी डाटा उन्हें इस वायरस के संबंध में प्राप्त हो उसे अन्य देश के साथ साझा करें क्योंकि हम अपने अस्तित्व के लिए लड़ रहे हैं और इस चुनौती से कोई भी देश अकेले नहीं लड़ सकता। लेकिन उनका मानना हैं कि दुर्भाग्य से इस महामारी के दौर में कुछ राष्ट्र जिसमें भारत भी सम्मिलित है, को छोड़ दिया जाए तो अंतर्राष्ट्रीय व्यवस्था में दुनिया के विभिन्न देशों द्वारा ऐसे सामूहिक प्रयास नहीं हो रहे हैं। अंतराष्ट्रीय समुदाय को लकवा मार गया है इससे पहले के दो वैश्विक संकट जैसे कि 2008 का वित्तीय संकट हो या 2014 का इबोला महामारी इन दोनों संकटों में संयुक्त राज्य अमेरिका ने वैश्विक नेतृत्व किया था और संकट से लड़ने के लिए हर संभव प्रयास भी किए थे, पर वर्तमान समय में कोरोना वायरस महामारी में अमेरिकी प्रशासन व उसकी वैश्विक भूमिका दोनों ही स्तर पर अमेरिकी नेतृत्व सक्रिय नजर नहीं आ रहा है। वर्तमान अमेरिकी प्रशासन स्वयं को वैश्विक भूमिका से अलग करते हुए 'अमेरिका फर्स्ट' पर फोकस कर रहा है और 'अमेरिका प्रथम की नीति' पर काम कर रहे हैं। अमेरिका मानवता की चिंता के लिए अंतर्राष्ट्रीय समुदाय का सहयोग उस दृष्टिकोण से करता नजर नहीं आ रहा है जैसा कि उससे अपेक्षा थी।

eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 5, Issue 01, Jan 2022

हरारी का मानना है कि अमेरिका ने वैश्विक संस्थाओं के माध्यम से कर रहे आर्थिक सहयोग को भी धीरे–धीरे बंद करना शुरू कर दिया है और उनकी वित्तीय सहायता भी रोक ली, जिसमें विश्व स्वास्थ्य संगठन भी आता हैं। वर्तमान में जिस प्रकार अमेरिका द्वारा अंतर्राष्ट्रीय व्यवहार का निष्पादन किया जा रहा है, यदि अमेरिका भविष्य में कोई कार्य योजना बनाता है तो उसे दुनिया के प्रत्येक देश किस रूप में देखने का प्रयत्न करेंगे यह भी एक महत्वपूर्ण प्रश्न होगा।2 अभी तक वैश्विक समस्याओं का वैश्विक समाधान होता था परंतु इस महामारी में प्रत्येक देश अपनी सीमा के भीतर ही लड़ रहा है, जो कि यह इंगित करता हैं कि एक नए प्रकार की अंतर्राष्ट्रीय व्यवस्था का उदय हो रहा है, जहाँ नये प्रकार के ध्रुव या गठबंधन फिर से इस विश्व व्यवस्था में स्थापित हो सकते हैं, क्योंकि इस महामारी में जिस तरह से प्रत्येक देश स्वयं में इस चुनौती से लड़ने का प्रयास कर रहे हैं और अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं के क्रियान्वयन में भागीदार नहीं बनना चाहते हैं। उससे एक नये आयामों का जन्म होगा इस प्रकार राष्ट्रों का अंतर्राष्ट्रीय व्यवहार आगे चलकर कहीं न कहीं वैश्विक एकता को कमजोर साबित करेगी।3

इस वैश्विक आपदा की स्थिति में जहाँ प्रत्येक देश अपने स्तर पर इस महामारी से लड़ रहे हैं वहीं दूसरी ओर वैश्विक महाशक्तियों ने एक–दूसरे के ऊपर आरोप–प्रत्यारोप करने शुरू कर दिए। हाल में ही चीन सरकार के विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता ने यह बयान दिया कि कोरोना वायरस की उत्पत्ति को लेकर भ्रांति फैलाई जा रही है जबकि इसकी उत्पत्ति में संयुक्त राज्य अमेरिका की भूमिका रही है। वहीं संयुक्त राज्य अमेरिका ने भी पलटवार करते हुए कहा कि इसकी उत्पत्ति चीन में हुई है तथा चीन ने इसको एक महीने तक छिपाए रखा एवं अमेरिका के द्वारा इस वायरस को 'वुहान वायरस' या 'चाईनीज वायरस' के रूप में संबोधित किया जाने लगा।4 अमेरिका द्वारा चलाए गए इस मुहिम का समर्थन कमोवेश सभी विकसित देशों ने किया। हालांकि चीन का दावा है कि पेशेंट जीरो (जो ऐसा व्यक्ति है जो किसी भी संक्रामक बीमारी का पहला वाहक है अमेरिकी सेना का एक सैनिक था) जो चीन में आयोजित खेलों में भाग लेने वुहान आया था। वहीं दूसरी ओर रूस ने इन दोनों देशों के आरोप–प्रत्यारोप की राजनीति में अमेरिका की आलोचना की एवं अमेरिकी भूमिका के संदर्भ में चीन की आपत्ति का समर्थन भी किया।

कोरोना महामारी ने स्वास्थ्य आपदा के साथ–साथ विश्व के राजनीतिक एवं आर्थिक व्यवस्था में भी अत्यंत बदलाव ला दिया। कोरोना वायरस के कारण कई विकसित देशों ने अपनी नीतियों एवं वैश्वीकरण के प्रति अपनी प्रतिबद्धता में भी बदलाव लाया है।5 चीन का करीबी माने जाने वाला एवं

eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 5, Issue 01, Jan 2022

यूरोपियन यूनियन का सदस्य देश इटली, जो कि कोरोना वायरस के एक बड़े केन्द्र के रूप में उभरा, ने 'बेल्ट–एंड रोड एनिशियेटिव प्रोजेक्ट' समेत चीन के साथ अपनी सभी व्यापारिक एवं आर्थिक संबंधों पर रोक लगा दी। दूसरी ओर चीन का करीबी राष्ट्र माना जाने वाला ईरान ने भी इस वैश्विक आपदा में चीन से सहायता ना मांग कर अमेरिकी प्रभुत्व वाले अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष से सहायता की अपील की एवं चीन के साथ अपने आर्थिक गतिविधियों को कम करना शुरू किया। इस प्रकार के परिवर्तन आने वाली एक नई विश्व व्यवस्था की ओर इशारा करते हैं।6 यूरोपियन यूनियन के रिसर्च थिंक टैंक ने दावा किया कि चीन के 'बेल्ट–एंड रोड एनिशियेटिव' के माध्यम से बढ़ती उसकी कनेक्टिविटी ने एक स्थानीय प्रकोप को वैश्विक महामारी बना दिया। इनका मानना है कि इससे पहले भी चीन में सार्स जैसी महामारी फैली थी परंतु उस वायरस का प्रकोप चीन तक ही सीमित रहा था, क्योंकि उस समय चीन की वैश्विक बाजार तक पहुंच अपेक्षाकृत आज के समय से कम थी।

कोरोना वायरस जैसी स्थानीय महामारी वैश्विक प्रकोप इसलिए भी बनी की इस पूरे घटनाक्रम में मौजूदा विश्व व्यवस्था में कोई भी वैश्विक नेतृत्व नहीं दिखाई दिया। जहाँ एक तरफ कोविड–19 से चीन को आलोचनाएं झेलनी पड़ी, वही उसका मित्र राष्ट्र पाकिस्तान उसके साथ पूरी एकजुटता से खड़ा रहा। पाकिस्तान ने अपनी संसद में चीन के कोविड–19 से संबंधित प्रयासों के नाम से प्रस्ताव पारित किया एवं चीन के सहयोग के प्रति आभार जताया। चीन के विदेश मंत्रालय ने इस समर्थन पर पाकिस्तान के साथ भविष्य में विकास, मित्रता और बंधुता के साथ खड़े होने की बात की।7 पाकिस्तान द्वारा इस महामारी के दौरान अमेरिका और उसके मित्र देशों के विपरीत एक अलग ही प्रोपेगेंडा का निर्माण कर रहा है जहां चीन की महामारी में भूमिका को बचाए जाने की कोशिश की जा रही है। पाकिस्तान लगातार इस बात का भी प्रयास किया गया कि दक्षिण एशिया में चीन के प्रति एक सहमति का वातावरण तैयार करें। इस प्रकार का चीन के प्रति पाकिस्तान का समर्पण पाकिस्तान की स्वतंत्र विदेश नीति की जगह एक आयतित विदेश नीति को प्रदर्शित करता है जिस पर चीन का नियंत्रण है।

कोरोना वायरस ने ना केवल स्वास्थ्य तंत्र को चपेट में लिया बल्कि दुनिया के प्रत्येक देश की आर्थिक क्रियाओं को सुस्त कर दिया प्रत्येक देश अपने यहाँ राष्ट्रीय स्तर पर आर्थिक चुनौतियों से लड़ रहे हैं क्योंकि हर देश की आर्थिक व्यवस्था इस महामारी में काफी प्रभावित हुई हैं। अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष ने यह इंगित किया है कि आने वाले समय में अमेरिका सहित कई विकसित देशों की अर्थव्यवस्था में नकारात्मक प्रगति देखी जा सकती हैं। इस महामारी में जिस प्रकार का आर्थिक

eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 5, Issue 01, Jan 2022

नुकसान प्रत्येक देश को हो रहा है वह यह इंगित करता है कि यह अब तक का सबसे बड़ा आर्थिक संकट है। भारत भी इससे अछूता नहीं है यहाँ पर न केवल अर्थव्यवस्था के समक्ष चुनौतियां है बल्कि श्रमिक प्रवासियों, मजदूरों एवं शोषित वर्गों के आजीविका का संकट भी भारत के समक्ष एक बहुत बड़ी चुनौती खड़ी हुई है। परंतु यहाँ पर नरेंद्र मोदी सरकार ने जिस कार्यशैली से इन सभी चुनौतियों से लड़ने का प्रयास किया है वह भी काफी सराहनीय रही है। भारत के प्रधानमंत्री द्वारा अलग से कोविड–19 सेल का गठन किया गया जिसके तहत कोरोना महामारी की रोकथाम करने एवं अर्थव्यवस्था से उत्पन्न संकट से प्रभावित तबकों की मदद करना है।

भारत सरकार ने कोरोना महामारी के इस संकट में वंचित तबकों, श्रमिकों, मजदूरों एवं महिलाओं के लिए बड़े नीतिगत फैसले किए ताकि इन समूहों के सामने आजीविका का संकट ना खड़ा हो। भारत सरकार ने देश के अंदर इस महामारी की स्थिति से निपटने के लिए प्रवासी मजदूरों, फेरी लगाने वाले लोगों, जनजातीय समूहों तथा किसानों के लिए 'आत्मनिर्भर भारत अभियान' की शुरूआत की जिसके तहत उनकी व्यापक आर्थिक मदद की जा सके एवं स्वावलंबन एवं आत्मनिर्भरता की तरफ भारत को अग्रेषित किया जा सके।8 आत्मनिर्भर अभियान के तहत भारत सरकार द्वारा यह भी प्रयास किया जा रहा हैं कि भारतीय अर्थव्यवस्था को स्वदेशी एवं स्वरोजगार आधारित बनाया जाए ताकि भारत को दुनिया के अन्य देशों पर कम से कम निर्भर होना पड़े। भारत सरकार ने भारतीय अप्रवासी लोगों के लिए 'वंदे भारत मिशन' की शुरूआत की जिसके तहत विदेशों में बसे भारतीय कामगार वर्गों एवं मजदूरों को सुरक्षित उनके घर पहुंचाया जा सके।9 जिसके तहत मजदूर, विद्यार्थी, बुजुर्ग एवं महिलाओं को प्राथमिकता दी गई। यह किसी देश द्वारा अपने नागरिकों को सुरक्षित घर लाने के लिए चलाया गया सबसे बड़ा अभियान है।

इन सबके अलावा श्रमिकों का शहरी राज्यों से ग्रामीण क्षेत्रों में पलायन भी एक बड़ा संकट खड़ा हुआ और भारत के प्रत्येक राज्यों ने इसको एक चुनौती के रूप में स्वीकार किया और अलग–अलग नीतिगत उपायों के द्वारा इसको हल करने की कोशिश की जा रही हैं। जिसमें उत्तर प्रदेश उल्लेखनीय रूप से इस चुनौती से निपटने में काफी हद तक सफल रहा है इस राज्य की कार्यप्रणाली इस महामारी में काफी सराहनीय रही है। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के द्वारा इस महामारी में जिस कार्यशैली तथा प्रशासनिक दक्षता का निष्पादन किया गया वह भी काफी सराहनीय है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के द्वारा यहाँ श्रमिकों एवं प्रवासी मजदूरों के लिए एक अलग से 'माइग्रेशन कमीशन' गठित करने का निर्णय लिया गया जिसका कार्य प्रवासी मजदूरों की

eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 5, Issue 01, Jan 2022

सकुशल घर वापसी एवं इनको ग्राम स्तर पर रोजगार मुहैया कराना है। इसके अलावा इस कमीशन के तहत सभी प्रवासी मजदूरों को बीमा कवर भी दिया जाएगा ताकि उनका जीवन सुरक्षित हो। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के द्वारा एक स्पेशल सेल का गठन किया गया जिसका कार्य ग्रामीण आधारित रोजगार को पैदा करना है ताकि सभी प्रवासी मजदूरों को उनकी योग्यता के हिसाब से काम मिल सके। इस प्रकार भारत सरकार एवं उसके राज्यों द्वारा इस महामारी से लड़ने का साझा प्रयास तो किया जा रहा है परंतु इस महामारी के व्यापक नुकसान से अर्थव्यवस्था एवं अपने नागरिकों को बचाने के लिए अभी और प्रयासों एवं नीतियों की जरूरत पड़ सकती है। भारत अपरिग्रह एवं वसुधैव कुटुंबकम पर चलने वाला राष्ट्र है। यहाँ शुरू से ही मनुष्य और प्रकृति दोनों को संवेदनशील कड़ी के रूप में देखा गया। कोरोना वायरस संकट में इस बार भारत ने फिर से एक बार यह स्पष्ट कर दिया कि विश्व को अपरिग्रह एवं एकात्म मानववाद का परिचय कराना उसका भौतिक, अध्यात्मिक एवं नैतिक उत्तरदायित्व है।

वैश्विक समरसता एवं विविधता में एकता रखने वाला राष्ट्र आज कोविड–19 जैसी महामारी में वैश्विक संरक्षण एवं मानव कल्याण में आगे रहने का दायित्व कैसे भूल सकता है। इस महामारी में भारत के राष्ट्रीय नेतृत्व द्वारा उसी पथ का अनुसरण किया गया जिसका उल्लेख बहुत साल पहले पंडित दीनदयाल उपाध्याय ने अपने विचारों में किया था। पंडित दीनदयाल उपाध्याय का मानना था कि भारत को साम्यवाद, समाजवाद या पूंजीवाद की नहीं बल्कि एकात्म मानववाद की जरूरत है क्योंकि यही एक ऐसा रास्ता है जो विश्व कल्याण के प्रति सोच रखता है। जिसके केन्द्र में ना तो वर्ग संघर्ष है ना ही मुक्त बाजार की परिकल्पना बल्कि यह आधारित है वसुधैव–कुटुंबकम पर। उनका मानना था कि मानवीय सभ्यताएं एक सर्पिलाकार मंडल है, जिसके केंद्र में व्यक्ति से व्यक्ति जुड़ा हुआ है जो एक परिवार बनाता है और यही परिवार मिलकर समाज, राष्ट्र और विश्व का निर्माण करते हैं क्योंकि सभी अंग एक दूसरे से जुड़े हुए हैं इसलिए प्रत्येक अंग को एक दूसरे के अस्तित्व की रक्षा एवं एक–दूसरे के कल्याण के प्रति चिंतित भी होना चाहिए।10

पंडित दीनदयाल जी ने अपने अंत्योदय के विचार में यह जोर दिया कि जब तक निर्धनों, मजदूरों, वंचितों तथा पिछड़े लोगों को आर्थिक विकास के केंद्र में नहीं लाया जाएगा तब तक सामाजिक न्याय की बात करना बेईमानी साबित होगी। उनके अनुसार यह कोई विचार नहीं बल्कि एक आर्थिक पद्धति है जहाँ अंतिम व्यक्ति की आवश्यकताओं को पूरा किया जा सकता है आज वर्तमान कोविड–19 हमारा शासन तंत्र इन्हीं चुनौतियों से लड़ता दिखाई प्रतीत होता है इस महामारी

eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 5, Issue 01, Jan 2022

ने सबसे ज्यादा चुनौती इन वंचित समूहों के सामने ही खड़ा किया है। इन समूहों के समक्ष आजीविका के संकट उत्पन्न हुए हैं जिसका हल पंडित दीनदयाल ने बहुत पहले अपने विचारों में नीति निर्देशकों को सुझाया था।

कोविड–19 महामारी में भारतीय नेतृत्व द्वारा इसी मार्ग का अनुसरण किया गया। एक ऐसा समय जब पूरी दुनिया एक बड़े संकट से गुजर रही है, और विश्व के तमाम विकसित देश लाचार स्थिति में है ऐसे में भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने जिस तरह से दुनिया के तमाम देशों से संवाद स्थापित करने का प्रयास किया और इस महामारी से निपटने के लिए एक साथ क्रियान्वयन करने को आमंत्रित किया उससे साबित हो गया कि भारत के पास पूरे विश्व को साथ लाने एवं नेतृत्व करने की क्षमता है। भारत के प्रधानमंत्री द्वारा दुनिया के तमाम देशों को साथ लाने की मुहिम चलाई गई यही नहीं दक्षिण एशियाई क्षेत्रों में कोरोना संकट से निपटने के लिए प्रधानमंत्री मोदी द्वारा सभी दक्षिण एशियाई देशों के शीर्ष नेतृत्व के साथ वीडियो–कांफ्रेंसिंग के जरिए संवाद स्थापित किया गया और मदद के लिए हाथ आगे बढ़ाएं गये। यह दुनिया के लिए एक बड़ा संदेश था जहाँ दुनिया के तमाम क्षेत्रीय संगठन यूरोपीय यूनियन, नाफ्टा, आसियान इस महामारी में एकजुट नहीं हैं वहीं भारत की इस पहल ने यह दिखा दिया कि इस चुनौती से निपटने के लिए सारे मतभेदों को भुलाकर साथ काम करने की जरूरत है।11

भारत ने सार्क देशों के समक्ष एक आपात कोष बनाने का प्रस्ताव रखा और उसमें भारत की ओर से एक करोड़ डॉलर देने की घोषणा भी की गई। यही नहीं भारत ने सार्क के सभी देशों को स्वास्थ्य सुविधाएं भी भेजने की अनुशंसा की है।12 इसके अलावा भारत ने निर्गुट देशों के साथ वीडियो कांफ्रेंसिंग कर इस महामारी से निपटने एवं साझा प्रयासों के क्रियान्वयन पर भी चर्चा की। भारत में कोरोना वायरस की आहट पर सबसे पहले 'ग्रुप ऑफ मिनिस्टर्स' का गठन किया गया जिसका कार्य भारत में कोरोना महामारी के कारण उत्पन्न चुनौती से निपटना एवं इसके दुष्प्रभाव को दूर करने के लिए वैकल्पिक नीति निर्माण की तैयारी करना है। प्रधानमंत्री मोदी द्वारा पहले जी–7 और फिर जी–20 देशों को साथ लाया गया एवं उनसे संकट पर चर्चा की गई, जी–20 के सभी देशों ने भारत की इस पहल की खुले तौर पर प्रशंसा की। भारत के प्रधानमंत्री द्वारा समय–समय पर दुनिया के प्रत्येक देशों को साथ लाने की उनकी अनुशंसा ने और साझा प्रयास की उनकी प्रतिबद्धता ने वैश्विक पटल पर उनको एक ऐसे नेता के रूप में पेश किया जिनके पास वैश्विक नेतृत्व करने की क्षमता है।

eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 5, Issue 01, Jan 2022

कोरोना संकट में कारगर दवा हाइड्राक्सीक्लोरोक्वीन जिसका उत्पादन भारत में बहुतायत रूप में होता है। अमेरिका, ब्राजील, इजरायल, श्रीलंका एवं अन्य कई देशों ने अपने यहां इस चुनौती से निपटने के लिए इस दवा के लिए भारत से अनुरोध किया। हालांकि भारत ने इस दवा के निर्यात पर प्रतिबंध लगा रखा था। परंतु अमेरिकी राष्ट्रपति सहित विश्व के कई अन्य देशों के अनुरोध पर भारत ने मानव कल्याण को देखते हुए इस दवा के निर्यात पर लगे प्रतिबंध को हटा दिया और इन तमाम देशों को ये दवा भेजी गई। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने एक इंटरव्यू के दौरान प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को धन्यवाद देते हुए यह कहा कि 'मोदी वास्तविक रूप में विश्व के एक महान नेता है जिनका दिल बहुत बड़ा है'।13 ब्राजील, इजराइल के शीर्ष नेतृत्व ने भारत की इस सहयोग के प्रति आभार प्रकट किया एवं प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की सराहना की। इसके अलावा भारत ने इस वैश्विक महामारी में अमेरिका और चीन दोनों से आग्रह किया कि वह एक दूसरे पर आरोप–प्रत्यारोप ना करके संकट की इस घड़ी में एक साथ आए। कोरोना वायरस के खिलाफ इस जंग में भारत ने अपने यहां मानव जिंदगी को बचाने हेतु कई नीतिगत फैसले लिए। वहीं दूसरी ओर देखा जाए तो विश्व के कई देश अपनी अर्थव्यवस्था को बचाने के लिए मानव जिंदगी को खतरे में डाल रहे हैं। कोरोना वायरस के खिलाफ भारत द्वारा उठाए गए इस कठोर कदम की प्रशंसा विश्व स्वास्थ्य संगठन सहित कई देशों ने किया। विश्व स्वास्थ्य संगठन के कार्यकारी निदेशक माइकल जे रेयान ने कहा कि भारत ने साइलेंट किलर कही जाने वाली कई गंभीर बीमारी जैसे कि 'स्मालपॉक्स' और 'पोलियो' के उन्मूलन में दुनिया का नेतृत्व किया है तथा भारत में कोरोना जैसी महामारी को भी खत्म करने की अपार क्षमता है।14

इस कोरोना वायरस महामारी में, भारतीय परंपरा को देखने के भी कई मामले आए। विश्व के कई देशों ने अभिवादन करने के लिए भारतीय शैली 'नमस्ते' का प्रयोग करना शुरू कर दिया ताकि, एक दूसरे के संपर्क में आने से बच सके। अर्नाल्ड टायनबी ने बहुत पहले भारतीय परंपरा के संबंध में कहा था कि ''वैश्विक विनाश से बचने का रास्ता केवल भारत का रास्ता है।''15 इस वैश्विक महामारी में विश्व के प्रत्येक देश को मानव कल्याण के लिए और मानव सेवा के लिए एकजुटता दिखानी चाहिए। भारत में बहुत पहले से ही प्राचीन दार्शनिकों के द्वारा समय–समय पर दुनिया को मानव सेवा के संदेश दिए गए हैं। ऐसे दौर में मानव समाज को स्वामी विवेकानंद के विचारों से सीख लेनी चाहिए। स्वामी विवेकानंद ने हमेशा अपने संदेश में मानवता और शांति को सबसे ऊपर रखा। स्वामी जी के विचार थे कि सब व्यक्तियों को अपने में पुरूषत्व, मानवता के श्रेष्ठ गुणों तथा आत्मसम्मान

eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 5, Issue 01, Jan 2022

की भावना का विकास करना चाहिए। प्रत्येक मनुष्य को अपने कर्म द्वारा अर्जित इस तपोगुण से वैश्विक भातृत्व एवं मानव कल्याण की सेवा करनी चाहिए।16

मानव समाज की सेवा के संदर्भ में भारत में प्राचीन चिंतकों का एक पूरा विमर्श मौजूद है, जो भारत का विश्व के प्रति वसुधैव कुटुंबकम की दृष्टिकोण को प्रदर्शित करता है। भारतीय चिंतक पंडित मदन मोहन मालवीय ने हिंदू धर्म व मानव कल्याण पर भाषण देते हुए कहा कि ''वे मनुष्य जो बिना किसी स्वार्थ और लाभ को देखते हुए निसहाय एवं दुर्बल वर्ग की सेवा करें उससे बड़ा सामाजिक धर्म कोई और नहीं''। और यह सब करने वाला मनुष्य उतने ही आशीर्वाद का भागी होता है जितना कि महायज्ञ करने वाले ऋषि मुनि।17 आज इस कोविड–19 महामारीं ने मनुष्य की भौतिकवादी शैली पर भी गहरा आघात डाला है। क्योंकि मानव सभ्यताएं जितनी ज्यादा आधुनिकता और भौतिकता का आवरण ओढ़ी हैं वैसे ही वैसे मानव समाज में अध्यात्मिकता एवं नैतिकता का क्षरण भी हुआ है। संसाधनों और तकनीकों की समृद्धि ने इस मानव सभ्यता में जन्म लेने वाली आपदा को और ज्यादा भयावह बना दिया है।18 वर्तमान परिस्थितियां यह दर्शाती है कि हमें मानव समाज में अध्यात्म को पुनर्जीवित करना होगा। जैसा कि भारतीय चिंतक अरविंद घोष ने स्वीकार किया था। अरविंद घोष बेंथम के उच्चतर भौतिक सुखों के विपरीत मानव विकास के लिए उच्चतर अध्यात्मिक सुखों को ज्यादा महत्व देते हैं। अरविंद घोष का मानना था कि अध्यात्मिक गुणों के विकास से मानव समाज में हो रहे नैतिक क्षरण को रोका जा सकता है। उनका मानना था कि ''यदि मानव स्वभाव का अध्यात्मिक पुनःनिर्माण न किया गया तो हमारी समूची मानव सभ्यता का विनाश अवश्यंभावी हैं।19

भारतीय चिंतक रविंद्र नाथ टैगोर भी अरविंद घोष की भांति अंतर्राष्ट्रीय अध्यात्मिक एकता के महत्व पर बल देते हैं। जब विश्व में राष्ट्रीय अधिकारों के लिए निरंतर संघर्ष चल रहा था उस समय उन्होंने राष्ट्रों की पारस्परिक मैत्री तथा एकता का समर्थन किया। उन्होंने चेतावनी दी कि यदि हम नकारात्मक राष्ट्रवाद की भावना का अंत नहीं करेंगे तो आने वाले समय में समूचे राष्ट्र की मानव सभ्यता का नकारात्मक विकास होगा। टैगोर भी मानव जाति की यांत्रिक एकता की भावना से संतुष्ट नहीं थे। उनका कहना था कि यांत्रिक युग में मनुष्य को कल पुर्जे की भांति प्रयोग किया जा रहा है प्रत्येक राष्ट्र इसी ढर्रे पर चल रहा है जिससे मनुष्य एवं मानवता का आध्यात्मिक पतन हो रहा है। उनका मानना था कि हमें अपनी चेतना के द्वारा सत्य का पहचान करना चाहिए क्योंकि आधुनिक विज्ञान के इस युग में मानव जातियों ने मशीनों पर भरोसा करना सीख लिया है। अतः आवश्यकता है अध्यात्मिक भावनाओं के उत्फलन की तभी मानव जाति का संघ संभव हो सकेगा और ऐसे संघ में

eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 5, Issue 01, Jan 2022

राष्ट्रीय स्वार्थपरता से ऊपर उठकर सद्भावना, अंतर्राष्ट्रीय मूल्यों एवं सामूहिक सुरक्षा के शासन की स्थापना हो सकेगी।20

कोरोना वायरस से उन मान्यताओं को भी आघात लगा है जो अर्थव्यवस्था और सीमाओं में अधिक खुले पन की वकालत करते रहे हैं। इससे भूमंडलीकरण की प्रक्रिया को भी ठेस पहुंची है। आने वाले समय में विश्व के प्रत्येक देश अपनी विदेश नीति की नए तरीके से समीक्षा करेंगे और पुनःमूल्यांकन भी कर सकते हैं। इसके अलावा प्रत्येक राष्ट्र दुनिया के अन्य राष्ट्रों के साथ कुछ सीमित प्रतिबंधों के साथ जुड़ सकते हैं। और यही नहीं वैश्विक गांव की मांग के खिलाफ आवाज भी बुलंद हो सकती हैं। विकसित देश अपनी व्यापार नीति एवं प्रवासियों से जुड़ी अपनी नीतियों में व्यापक बदलाव ला सकते हैं। अभी हाल में अमेरिका ने अपनी अप्रवासी नीतियों को कम करके यह स्पष्ट संकेत दे दिया है कि आने वाला समय इससे भी खतरनाक होगा। इन सबका असर भारत जैसे राष्ट्र पर भी पड़ेगा, क्योंकि सूचना, श्रम एवं नौकरियों के मुक्त प्रवाह की समृद्धि से भारत भी अधिक रूप में लाभान्वित हुआ है। तो ऐसे में भारत के समक्ष यह बड़ी चुनौती है कि वह इस प्रकार की आने वाली चुनौतियों से कैसे निपटें इसके अलावा नीति निर्माण स्तर पर ऐसे कौन से नए विकल्प की तलाश करें जो विश्व व्यवस्था में देश को आगे बढ़ाने में सहायक सिद्ध होंगे।

उम्मीद है कि दुनिया के सभी देश कोरोना वायरस के इस संकट को पराजित करने के लिए आरोप–प्रत्यारोप की राजनीति से ऊपर उठकर इस वैश्विक समस्या के समाधान में अपनी भूमिका का निर्वहन करने के लिए एक जिम्मेदार राष्ट्र के रूप में नजर आएंगे। इस क्रम में आने वाले समय में यह उम्मीद की जाएगी कि अंतर्राष्ट्रीय सहयोग एवं मानवीय मूल्यों को भी बल मिलेगा। हमें महात्मा गांधी के उस पथ का भी अनुसरण करना होगा जिसका उल्लेख उन्होंने अपनी पत्रिका यंग इंडिया के एक लेख में किया था कि ''यदि हमें प्रगति करनी है तो हम नए अविष्कार अवश्य करें, परंतु हमें यह भी ध्यान रखना होगा कि इसकी कीमत आध्यात्मिक एवं पर्यावरणीय क्षति न हो''। आने वाले समय में इसी प्रकार के नए संकट से निपटने के लिए दुनिया के सभी राष्ट्रों को एक नई प्रभावी संरचना बनानी पड़ेगी। पंडित दीनदयाल उपाध्याय द्वारा प्रतिपादित एकात्म मानववाद, स्वदेशी आधारित उद्योगों का वर्गीकरण और उनकी आर्थिक न्याय की परिकल्पना भी हमें इस संकट में एक मार्गदर्शन प्रदान करेगी तथा संपूर्ण विश्व एवं भारत के लिए एक नई राह प्रशस्त करेगी।

References

1 Harari Y, Noah. The World after Corona Virus. Financial Times. https:// www.ft.com.contentarticle. Accessed on May 25, 2020.

eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 5, Issue 01, Jan 2022

2 Harari Y, Noah (2020, April 20) Pandemic Policy will Influence World Politics, Economy for Decades. The Times of Israel. https://www. timesofisrael.com-interview

3 Mohan C, Raja (2020, April 7) Sovereignty is under stress, will need to be Reinvented. Available on https://indianexpress.com>article

4 Fuchs H, Michael.(2020, March 31) The US-China Corona Virus Blame Gameis Undermining Diplomacy. https://www.theguardian. com, Opinion.

5 Singh D, Zorawar. (2020, March 28) Covid-19 Should Make us Re-imagine the World Order. Economic Political Weekly. https://www. epw.in>strategic-affairs.

6 Council of European Union. (2020, April 9) Report on the Comprehensive Economic Policy Response to the Covid-19 Pandemic. https://www.consilium.europa.eu

7 Singh Priyanka. (2020, April 15) Covid-19 Crisis and Pakistan- China Equation. Manohar Parrikar Institute for Defence Studies and Analyses. https://idsa,in/idsacomment.

8 Mishra, Udit. PM Modi's Atmanirbhar Bharat Abhiyan Economic Package: Here is the fine Print. The Indian Express. Available at https://indianexpress.com>article. Accessed on May 15, 2020.

9 Ministry of External Affairs, Government of India . Vande Bharat Missions. Available at https://mea.gov.in-vande-bharat mission. Accessed on April 6, 2020.

10 Upadhyaya, Deendayal. Integral Humanism: An Analysis of Some Basic Elements. New Delhi: Prabhat Prakashan. Revised by 2016. P(28)

11 Pant, V. Harsh. (2020, May 2) Indian Diplomacy in the Age of Covid-19. Observer Research Foundation. https://www.orfonline.org/expert-speak

12 के, ओहोम (2020) कोविड 19: वैश्विक संकट के दौर में भारत की सार्क डिप्लोमेसी. ऑब्जर्वर रिसर्च फाउंडेशन. Available at https://www.orf.org-opinion

13 Siddiqui, Huma. (2020, April 8) Fight against Coronavirus : Trump praises PM Modi ; Indian Foreign Secretary Shringla talks to his US counterpart. financial Express. https://www.financialexpress.com

14 Business Standard. (2020, March 24) India has tremenddous capacity to combat Covid-19: WHO. available at https://www.business-standard.com

15 Toynbee, J Arnold. One World India Azad Memorial Lectures, 1960. Indian Council for Cultural Relations; Sole Distributors: Orient Longmans.

16 Mukherji M, Sankar.(2015) The Monk as Man: The Unknown Life of Swami Vivekananda: Penguin India. P(102-104)

17 Chaturvedi, Sitaram. (2014) Builders of Modern India: Madan Mohan Malaviya: Publication Division, Government of India. P(132)

18 Jason, Hickel. (2018) The Divide : A Brief Guide to Global Inequality and its Solutions: Windmill Books Publisher. P (82-84).

eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 5, Issue 01, Jan 2022

19 Ghose, Aurobindo. "The Ideal of Human Unity- War and Self- Determinations". Revised in 1998 by Sri Aurobindo Ashram Publications Department. P(24-26).

20 Chakrabarty Bidyut, Pandey K Rajendra. (2009) Modernlndian Political Thought.Sage Texts P (173-175).